Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2409III07V12P0009

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research
Issue–II(VIII), Volume–XII

रोजगारपरक एवं कौशलयुक्त शिक्षा की दिशा एवं दशा का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में समीक्षात्मक अध्ययन

[*]विवेक कुमार दीक्षित, [**]प्रोफेसर (डॉ.) भारती डोगरा
Email : vivekkumardixit367@gmail.com
Contact No. : - 9058185246
[*]शोध छात्र, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली
[**]प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, बरेली कॉलेज बरेली

सारांश

रोजगारपरक शिक्षा तथा कौशलयुक्त श्रम शक्ति की आधुनिक कार्य संस्कृति में तीव्रता से माँग बढ़ रही है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अत्याधुनिक तकनीकी तथा आईसीटी का समाकलन अनिवार्य रूप से लागू होता जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आधारभूत तथा बहु – विषयक ज्ञान परंपरा के विकास पर जोर दे रही है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा जारी आँकड़ों एवं रिपोर्टों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रोजगार अथवा स्व – रोजगार के मामले में भारत की स्थिति अभी बेहतर नहीं है । तमाम शोध अध्ययन इस बात का दावा करते हैं कि उपयुक्त रोजगार न मिलने का प्रमुख कारण कुशलता से परिपूर्ण मानव संसाधन का अभाव है। आधारभूत कौशल तथा तकनीकी की समझ विकसित करके बेरोजगारी की समस्या से निपटने में सहायता मिल सकती है, अतः ऐसे शैक्षिक तंत्र के विकास की आवश्यकता है जिसके माध्यम से शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर आवश्यक दक्षता एवं कुशलता का विकास विद्यार्थियों में संभव हो सके।

बीज शब्द – रोजगारपकता, कौशलयुक्त शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बेरोजगारी

प्रस्तावना

वर्तमान में वैश्विक परिदृश्य द्रुत गति से परिवर्तित हो रहा है। बदलते वैश्विक परिदृश्य तथा 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप रोजगार के स्वरूप तथा श्रम की माँग की संरचना में आधारभूत एवं व्यापक बदलाव हो रहा है। **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** इस तथ्य को स्पष्ट रूप से इंगित करती है कि बिग डेटा, मशीन लर्निंग तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में तीव्र विकास एवं अत्याधुनिक परिवर्तनों के कारण भविष्य में विश्व भर में अकुशल श्रमिकों का स्थान मशीनें ले लेंगी वहीं इसका सुखद पक्ष यह भी वर्णित है कि अत्याधुनिक मशीनों के कुशल संचालन के लिए कौशलयुक्त मानव संसाधन की माँग तीव्र गति से बढ़ेगी अर्थात ऐसे लोग जो आधुनिक विज्ञान, मशीनी निपुणता एवं प्रौद्योगिकी में दक्ष हैं उनकी माँग श्रम बाजार में बढ़ेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस बात का भी संकेत देती है कि भविष्य के कार्यक्षेत्र में ऐसे व्यक्तियों की माँग भी बढ़ेगी जो बहु – विषयक ज्ञान रखते हों अर्थात विज्ञान के साथ – साथ कला एवं मानविकी विषयों में भी निपुण हों। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भविष्य में शिक्षा द्वारा युवाओं का चतुर्दिक विकास आवश्यक है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में रोजगार तथा कौशल की बात की जाए तो स्पष्ट रूप से यह दिखेगा कि पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई है परंतु रोजगार का सृजन उपयुक्त रूप से नहीं हो सका है जिसके फलस्वरूप बेरोजगारी की स्थिति भयावह होती जा रही है। यद्यपि बेरोजगारी के इस पक्ष के साथ – साथ दूसरा पक्ष यह भी है कि हमारी शिक्षा प्रणाली ऐसे मानव संसाधन का विकास कर पाने में अक्षम सिद्ध हो रही है जो कि आधुनिक कार्य आवश्यकता के अनुरूप हो, बहुत से आँकड़े इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। इंस्टिट्यूट फॉर मैनेजमेंट डेवेलपमेंट (IMD) द्वारा जारी वर्ल्ड टैलेंट रैंकिंग 2023 में भारत 64 देशों की सूची में 56वें स्थान पर रहा। ध्यातव्य हो, इस रैंकिंग के तहत किसी देश की अपनी घरेलू प्रतिभाओं की योग्यता एवं कौशल को विकसित करने की योग्यता का

मूल्यांकन किया जाता है। यूएस चैम्बर ऑफ कॉमर्स की ग्लोबल इनोवेशन पॉलिसी द्वारा जारी अंतरराष्ट्रीय बौद्धिक संपदा सूचकांक 2023 में भारत 55 देशों की सूची में 42वें पायदान (समग्र स्कोर : 38.76%) पर रहा। वहीं वैश्विक प्रतिभा प्रतिस्पर्द्धा सूचकांक, 2023 में सम्मिलित 134 देशों में भारत का स्थान 103 रहा। मानव विकास सूचकांक 2023 में सम्मिलित कुल 191 देशों में भारत 132वें स्थान पर रहा जो कि बांग्लादेश और श्रीलंका से भी नीचे है। ये सभी आँकड़े हमारी अर्थव्यवस्था एवं शिक्षा प्रणाली पर एक प्रश्न चिन्ह लगाते हैं तथा यह भी स्पष्ट होता है कि अन्य सभी संसाधनों के साथ – साथ सुदृढ़ एवं सुगठित शिक्षा व्यवस्था एवं रोजगार किसी भी राष्ट्र को शीर्ष पर ले जाने के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। इंडिया स्किल्स रिपोर्ट 2023 के आँकड़ों के अनुसार भारत का औसत रोजगार प्रतिशत 50.30 प्रतिशत रहा जिसमें क्रमशः पुरूष 47.20 प्रतिशत एवं महिलायें 52.8 प्रतिशत थीं। यद्यपि सुखद पक्ष यह है कि रोजगार प्रतिशत में वर्ष 2022 के 46.2 प्रतिशत के सापेक्ष लगभग 4 प्रतिशत का सुधार हुआ है।

प्रमुख प्रश्न –

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की रोजगारपक शिक्षा एवं कौशल के प्रति क्या प्रतिबद्धता है ?
2. भारत के समुचित आर्थिक विकास के लिए किस तरह की श्रम शक्ति की आवश्यकता है ?
3. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यक्रमों को रोजगारपक एवं कौशलयुक्त कैसे बनाया जाए ?
4. आधुनिक तकनीकी से सामंजस्य करने योग्य कुशल युवाशक्ति का विकास कैसे किया जाए ?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में रोजगार तथा कौशल – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यार्थियों में आधारभूत ज्ञान एवं कौशल विकसित करने की वक़ालत करती है, इसके दस्तावेज में स्पष्ट रूप से **सतत विकास एजेंडा 2030** के लक्ष्य – 4 (SDG – 4) में वर्णित "सभी के लिए समावेशी शिक्षा एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा" के लिये आवश्यक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह स्वीकार करती है कि रोजगार और वैश्विक परिदृश्य में तीव्र गति से आये परिवर्तनों के कारण यह आवश्यक है कि विद्यार्थी सतत एवं अधुनातन सीखने का प्रयास करते रहें। विद्यार्थियों को रोजगारपरक बनाने के लिए कक्षा छः से ही स्थानिक विषयों तथा आवश्यकताओं के अनुरूप व्यावसायिक विषयों की शिक्षा की वकालत की गई है। बकौल NEP 2020 - **"यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्या ज्ञान जैसी बुनियादी क्षमताओं के साथ – साथ 'उच्चतर स्तर' की तार्किक और समस्या समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिये बल्कि नैतिक, सामाजिक एवं भावात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना आवश्यक है"।** यह नीति विद्यार्थियों में पर्याप्त जीवन कौशल जैसे – आपसी संवाद, सामूहिक कार्य, सहयोग एवं लचीलापन का विकास करने की सिफारिश करती है। कुल मिलाकर यह नीति ऐसी शिक्षा व्यवस्था का पुरजोर समर्थन करती है जिसके माध्यम से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करके वर्तमान की आवश्यकता के अनुरूप दक्ष करके आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

रोजगारपकता – रोजगारपरकता से तात्पर्य विद्यार्थियों में विद्यमान ऐसे ज्ञान तथा कौशल से है जिससे उन्हें रोजगार प्राप्त करने में सुगमता हो।

फुगेट एवं अन्य (2004) ने बताया कि रोजगारपकता कार्य विशेष हेतु सक्रिय अनुकूलनशीलता का रूप है जो कि कर्मचारियों को कैरियर अवसरों की पहचान तथा समझने में सक्षम बनाती है।

वॉन्टेर्क, कूपर, पीटर्स तथा विट्टे (2014) के द्वारा रोजगारपकपरकता को स्पष्ट करते हुए बताया गया कि Employability शब्द दो शब्दों 'employment' एवं 'ability' से मिलकर बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है रोजगार की योग्यता।

अमेरिकन सोसाइटी फॉर डेवेलपमेंट (ASID) के द्वारा कुछ ऐसे कारकों की पहचान की गई है जो रोजगार के लिए अत्यंत ममहत्त्वपूर्ण हैं, निम्नलिखित हैं –

1. आधारभूत योग्यताएँ (लिखना, पढ़ना, गणना करना)

2. संचार कौशल (बोलना, सुनना)
3. अनुकूलन (समस्या समाधान क्षमता, रचनात्मक सोच)
4. विकास (आत्म सम्मान, अभिप्रेरणा तथा लक्ष्य निर्धारण)

गोसल्या एवं प्रीथा (2018) ने एक वर्णनात्मक अध्ययन में पाया कि श्रवण कौशल, तर्क कौशल, समय प्रबंधन, समूह में कार्य करने की योग्यता, समस्या समाधान कौशल तथा स्व – प्रबंधन का छात्रों की रोजगारपकता पर सकारात्मक प्रभाव है।

अग्निहोत्री, सरीन तथा शिवकुमार (2020) ने अपने अध्ययन में पाया कि अनुभूत रोजगारपकता (perceived employability) में कुछ कारकों का होना आवश्यक है यथा – आत्म विश्वास, शैक्षिक प्रदर्शन, संपर्क, सामान्य कौशल, आधारभूत साक्षरता तथा गणना कौशल, कैरियर शिक्षा, रोजगार सहायता आदि।

कुमार (2020) ने अपने अध्ययन के माध्यम से सुझाव दिया कि विद्यार्थियों की शिक्षा तथा रोजगार कौशलों मध्य व्याप्त अंतराल को समाप्त करने हेतु प्रचलित पाठ्यक्रमों में यथोचित परिवर्तन की आवश्यकता है।

मंजूनाथ (2021) ने स्पष्ट किया कि रोजगारपकता काफी हद तक मृदु कौशलों पर निर्भर करती है। जैसे – संचार, श्रवण तथा तकनीकी कौशल इत्यादि।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में रोजगारपक तथा कौशलयुक्त शिक्षा – प्राचीन भारतीय शिक्षा एवं ज्ञान परंपरा इतनी समृद्ध थी जिसके माध्यम से न सिर्फ आध्यात्मिक उन्नति होती थी अपितु भौतिक संसार में जीवन – यापन हेतु व्यावहारिक विषयों का ज्ञान प्राप्त करके विद्यार्थी उपयुक्त रोजगार अथवा व्यवसाय के योग्य हो जाता था। बदलते परिवेश के साथ शिक्षा का स्वरूप बदला तथा भौतिक जीवन की शिक्षा को आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा के ऊपर रखा जाने लगा। समय की माँग के अनुरूप बदली शिक्षा व्यवस्था कई चरण पर करके आधुनिक चरण में पहुँची। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हमने अकादमिक शिक्षा के नाम पर मात्रात्मक वृद्धि के रूप में विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि की परंतु गुणवत्ता के नाम पर निरंतर पिछड़ते रहे। गुणवत्तापूर्ण तथा तकनीकी कौशल के अभाव में वर्तमान पीढ़ी को रोजगार के लिए दर – दर भटकना पड़ रहा है। तमाम रिपोर्टों के माध्यम से यह तथ्य सामने आते रहते हैं कि अधिकांश उच्च – शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी अपने विषय की बुनियादी समझ भी नहीं रखते। अर्थात उच्च शिक्षा अब रोजगार से अधिक डिग्री प्रदान करने वाली व्यवस्था हो गई है। यद्यपि सरकार द्वारा समय समय पर विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन के माध्यम से रोजगार एव कौशल बढ़ाने का प्रयत्न किया जाता है, इनमें प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना, स्टार्ट अप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा प्रारम्भ की गई श्रेष्ठ योजना आदि प्रमुख हैं।

यद्यपि भारतीय युवाओं में मेधा की कोई कमी नहीं है परंतु दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली के कारण उनमें उपयुक्त ज्ञान तथा कौशल का विकास नहीं हो पाता है। कुछ ऐसे बिंदु हैं जिनका अनुसरण करके युवाओं में व्याप्त बेरोजगारी की समस्या से एक सीमा तक निपटा जा सकता है –

1. शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पाठ्यक्रमों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य के अनुरूप संशोधित एवं अद्यतन किया जाना चाहिए तथा यह क्रम सतत जारी रहे, इसके लिए ठोस नीति की आवश्यकता है।
2. सैद्धांतिक पक्ष के साथ – साथ पाठ्यक्रम के व्यावहारिक अथवा क्रियात्मक पक्ष को सुदृढ़ किया जाए।
3. भारत के प्रत्येक केंद्रीय, राज्य तथा निजी विश्वविद्यालयों को प्रतिवर्ष अपने यहाँ से पास आउट छात्र – छात्राओं के प्लेसमेंट तथा स्व – रोजगार के आँकड़े सार्वजनिक करने चाहिए।
4. पाठ्यक्रम की कक्षाओं के दौरान विद्यार्थियों की उपस्थिति से संबंधित नियम कड़े हों।

5. प्रत्येक विद्यालय अथवा महाविद्यालय को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था से जोड़ते हुए उन्हें अनिवार्य रूप से आईसीटी तथा अत्याधुनिक तकनीकी से लैस होना सुनिश्चित किया जाए।
6. विशेषकर उच्च शिक्षा के प्रत्येक पाठ्यक्रम में छात्र – छात्राओं को उनके पाठ्यक्रम से जुड़े वास्तविक कार्य स्थल पर कार्य करने का अनुभव अथवा इंटर्नशिप अनिवार्य होनी चाहिए।
7. जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में वर्णित है, विद्यार्थियों को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों से जोड़कर उन्हें स्व – रोजगार तथा उद्यमिता से जुड़ने के लिए प्रेरित किया जाए।
8. उच्च शिक्षा के प्रत्येक पाठ्यक्रम में आईसीटी, कम्प्यूटर ज्ञान, मृदु कौशल, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) की समझ को उनके मूल विषय के अतिरिक्त अथवा मूल विषय में ही अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाए।
9. विद्यार्थियों को रोजगार अथवा स्व – रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

21वीं सदी में रोजगार तथा कौशलयुक्त शिक्षा – शिक्षा एवं रोजगार घनिष्ठता से एक – दूसरे के संपूरक हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में कुशल रोजगार के प्रकारों में वृद्धि हो रही है परंतु उसके लिए तकनीकी दक्षता एवं ज्ञान का होना आवश्यक है। शिक्षा एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से कुशल मानव संसाधन का विकास किया जाना संभव है। 21वीं सदी के विद्यार्थियों को इस प्रकार शिक्षित किया जाना चाहिए जिससे उनमें व्यावसायिक दक्षता का विकास हो तथा उन्हें रोजगार प्राप्त करने के लिए भटकना न पड़े। रोबोटिक्स तकनीकी, आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ सामंजस्य, सतत व्यक्तित्व परिमार्जन के साथ अधुनातन श्रम आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को विकसित करने वाले युवाओं को रोजगार प्राप्त करने में अपेक्षाकृत सरलता रहेगी।

निष्कर्ष – रोजगारपरकता के क्षेत्र में हुए शोध अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि हमारे देश के युवाओं में आवश्यक तकनीकी ज्ञान तथा कौशल न होने के कारण बेरोजगारी संकट भयावह रूप लिए हुए है। आधुनिक तकनीकी परिवेश में आईटी प्रोफेशनल्स, प्रबंधकीय दक्षता, आईसीटी से युक्त ज्ञान एवं कौशल से परिपूर्ण व्यक्ति अच्छे पैकेज पर रोजगार प्राप्त कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर उक्त कौशलों के अभाव में तमाम युवा बेकारी एवं बेरोजगारी का दंश झेलने को विवश हैं। अतः अन्य सभी पहलुओं के साथ – साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में वर्णित बहु – विषयक ज्ञान तथा कौशल के विकास की तकनीक को अपनाकर काफी हद तक बेरोजगारी की समस्या का समाधान किया जा सकता है। पाठ्यक्रमों में लचीलापन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा सतत मूल्यांकन से शिक्षा व्यवस्था में आमूल – चूल परिवर्तन लाकर उपयोगी नागरिक विकसित करने में सहायता मिलेगी।

REFERENCES

1. Agnihotri, S., Sareen, P., & Sivakumar, P. (2020). Student perceived employability with reference to media studies: validating A model of key determinants. *Journal of Content Community and Communication*, *12*(6), 30-41.
2. Fugate, M., Kinicki, A. J., & Ashforth, B. E. (2004). Employability: a psycho-social construct, its dimensions, and applications. *Journal of Vocational Behavior, 65(1),* 14-38.
3. Gowsalya, G. & Preetha, R. (2021). A study on employability skills among college students in Coimbatore distric, Tamilnadu. ERM Publications, ISSN – 2249 – 0310, 12(3), 13 – 18. DOI – 10.18843/ijcms/v12i3/02
4. Kumar V. S. (2020). A Study on employability skills gap analysis among the Arts and Science students in selected area of Tamilnadu. {29} *Infokara Research, ISSN – 1021 – 9056, 9(1),* 112-119. Retrieved from- https://www.infokara.com/gallery/14-jan-3448.pdf

5. Manjunath, D. R. (2021). The Impact of Academic performance on employability, a study. *Palarch's Journal of Archaeology of Egypt/ Egyptology, 18(10),* 508 – 517. Retrieved from - https:// archives.palarch.nl/index.php/jae/article/download/9797/9010
6. National Educational Policy 2020. Retrieved from - https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&opi=89978449&url=https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf&ved=2ahUKEwjI_tSukcuEAxX-SWwGHTrbA08QFnoECB4QAQ&usg=AOvVaw1LvoECphPp4d_4St71vV-v**https://imd.cld.bz/IMD-World-Talent-Report-20232/26/**
7. https://www.uschamber.com/intellectual-property/2023-international-ip-index
8. India skills Report 2023. Retrieved from - https://www.india-briefing.com/news/india-skill-report-2023-findings-on-talent-availability-and-employability-in-emerging-technologies-29148.html/
9. Vanhercke, D., De Cuyper, N., Peeters, E., & De Witte, H. (2014). Defining perceived employability: a psychological approach. *Personnel Review*, *43*(4), 592-605.